

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री रिशुधर्मे बलि कृता
॥ श्री सुदर्शनस्तुतिः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
॥ श्री सुदर्शनस्तुतिः ॥

बलिरुवाच

अनन्तस्याप्रमेयस्य विश्वमूर्तेर्महात्मनः।
नमामि चक्रिणश्चक्रं करसङ्गि सुदर्शनम् ॥ 1 ॥

सहस्रमिर सूर्याणां सञ्घातं विदुतामिर।
कालाग्निमिर यच्छक्रं तद्विषेणः प्रणमाम्यहम् ॥ 2 ॥

दुष्टराह्णलच्छेदशोणितारुणतारकम्।
तन्नमामि हरेश्चक्रं शतनेमि सुदर्शनम् ॥ 3 ॥

यस्यारकेषु शक्राद्या लोकपाला र्यरस्थिताः।
तदन्तर्सरौ रुद्रास्तथैर मरुतां गणाः ॥ 4 ॥

धारायां द्वादशादित्याः समस्ताश्च हताशनाः।
धारालालेहक्वयः सर्वे नाभिमध्ये प्रजापतिः ॥ 5 ॥

समस्तनेमिष्वथिला यस्य विद्याः प्रतिष्ठिताः।
यस्य रूपमनिर्देश्यमपि योगिभिरुत्तमैः ॥ 6 ॥

यद्भ्रमंसुरसञ्घानां तेजसः परिवृंहणम्।
दैतेयौजसां च नाशाय तन्नमामि सुदर्शनम् ॥ 7 ॥

भ्रमन्महारेगविभ्रान्ताखिलखेचरम्।
तन्नमामि हरेश्चक्रमनन्तारं सुदर्शनम् ॥ 8 ॥

নক্ষত্রদ্বাহিকণর্যাপ্তং কৃৎস্নং নভস্তলম্।
তন্নমামি হরেশচক্রং করসঙ্গি সুদর্শনম্ ॥ 9 ॥

স্বভারতেজসা যুক্তং যদর্কাগ্নিমযং মহৎ।
বিশেষতো হরের্গংরা সর্দেদেয়মযং করম্ ॥ 10 ॥

দুর্ভুতদৈত্যমখনং জগতঃ পরিপালকম্।
তন্নমামি হরেশচক্রং দৈত্যচক্রহরং পরম্ ॥ 11 ॥

করোতু মে সদা শর্ম ধর্মতাং চ প্রযাতু মে।
প্রসাদসুমুখে কৃষে তস্য চক্রং সুদর্শনম্ ॥ 12 ॥

স্বভারতেজসা যুক্তং মধ্যাহ্নকসমপ্রভম্।
প্রসীদ সংযুগেহরিণাং সুদর্শনসুদর্শনম্।
বিদ্যুজ্জ্বালামহাকক্ষং দহান্তর্মম যত্তমঃ ॥ 13 ॥

জহি নো বিষয়গ্রাহি মনো গ্রহরিচেষ্টিতম্।
বিস্ফোটাখিলাং মায়াং কুরুষ্বর বিমলাং মতিম্ ॥ 14 ॥

॥ ইতি শ্রী সুদর্শনস্তুতিঃ সমাপ্তা ॥